

सूरह हिज्र - 15



सूरह हिज्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 99 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं० 80-87 में हिज्र के वासी: ((समूद जाति)) के अपने रसूलों के झुठलाने के कारण विनाश की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम ((सूरह हिज्र)) है।
- इस की आयत 1 में कुर्आन की विशेषता का वर्णन है। तथा 2-15 में रिसालत के विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है। फिर आयत 16 से 25 तक में उन निशानियों की ओर संकेत किया गया है जिन पर विचार करने से बड़ी तथा रिसालत और हथ्र से संबंधित संदेहों का निवारण हो जाता है।
- आयत 26-44 में इब्लीस के कुपथ हो जाने का वर्णन है जो मनुष्य को कुपथ करने के लिये बड़ी तथा रिसालत के बारे में संदेह पैदा कर के उसे सत्य से दूर रखना चाहता है जिस का परिणाम नरक है। तथा आयत 45 से 48 तक उन के अच्छे परिणाम को बताया गया है जो उस की बात में नहीं आये और अल्लाह से डरते तथा शिर्क और उस की अवैज्ञा से बचते रहे।
- आयत 49-84 में नबियों के इतिहास से यह बताया गया है कि अल्लाह के सदाचारी भक्तों पर उस की दया होती है और दुराचारियों पर यातना के कोड़े बरसते हैं।
- आयत 85-99 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा सदाचारियों के लिये दिलासा का सामान भी है और यह निर्देश भी है कि जो माया मोह में मग्न हैं उन के आर्थिक धन की ओर लालसा से न देखें बल्कि उस बड़े धन का आदर करें जो कुर्आन के रूप में उन्हें प्रदान किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, रा। वह इस पुस्तक,
तथा खुले कुर्आन की आयतें हैं।
2. (एक समय आयेगा), जब काफ़िर
यह कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा
होता यदि वे मुसलमान^[1] होते?
3. (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें, वह
खाते, तथा आनन्द लेते रहें, और
उन्हें आशा निश्चेत किये रहे, फिर
शीघ्र ही वह जान लेंगे।^[2]
4. और हम ने जिस बस्ती को भी ध्वस्त
किया उस के लिये एक निश्चित
अवधि अंत थी।
5. कोई जाति न अपनी निश्चित अवधि
से आगे जा सकती है, और न पीछे
रह सकती।
6. तथा उन (काफ़िरों) ने कहा: हे
वह व्यक्ति जिस पर यह शिक्षा
(कुर्आन) उतारा गया है! वास्तव में
तू पागल है।
7. क्यों हमारे पास फ़रिश्तों को नहीं
लाता यदि तू सच्चों में से है?

الرَّسْمِ تِلْكَ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ
مُّبِينٍ ۝

رُبَّمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَ كَانُوا
مُسْلِمِينَ ۝

ذَرَهُمْ يَآكُلُوا وَيَسْتَمْتَعُوا وَيُلْهِمُ الْأَمَلُ
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ
مَّعْلُومٌ ۝

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجْلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ
لَمَجْنُونٌ ۝

لَوْ مَا تَأْتِيَنَا بِالْمَلِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝

1. ऐसा उस समय होगा जब फ़रिश्ते उन की आत्मा निकालने आयेंगे, और उन को उन का नरक का स्थान दिखा देंगे। और क्यामत के दिन तो ऐसी दूर्दशा होगी कि धूल हो जाने की कामना करेंगे। (देखिये: सूरह नबा, आयत: 40)

2. अपने दुष्परिणाम का।

8. जब कि हम फ़रिश्तों को सत्य (निर्णय) के साथ ही^[1] उतारते हैं, और उन्हें उस समय कोई अवसर नहीं दिया जाता।
9. वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा (कुर्आन) उतारी है, और हम ही उस के रक्षक^[2] हैं।
10. और हम ने आप से पहले भी प्राचीन (विगत) जातियों में रसूल भेजे।
11. और उन के पास जो भी रसूल आया, परन्तु वह उस के साथ परिहास करते रहे।

مَا نَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِلَّا
مُنظَرِينَ ۝

إِنَّا نَحْنُ نُزِّلُ الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِعْمِ الْأَوَّلِينَ ۝

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِئُونَ ۝

1 अर्थात् यातनाओं के निर्णय के साथ।

2 यह इतिहासिक सत्य है। इस विश्व के धर्म ग्रंथों में कुर्आन ही एक ऐसा धर्म ग्रंथ है जिस में उस के अवतरित होने के समय से अब तक एक अक्षर तो क्या एक मात्रा का भी परिवर्तन नहीं हुआ। और न हो सकता है। यह विशेषता इस विश्व के किसी भी धर्म ग्रंथ को प्राप्त नहीं है। तौरात हो अथवा इंजील या इस विश्व के अन्य धर्म शास्त्र हों, सब में इतने परिवर्तन किये गये हैं कि सत्य मूल धर्म की पहचान असम्भव हो गयी है।

इसी प्रकार इस (कुर्आन) की व्याख्या जिसे हदीस कहा जाता है वह भी सुरक्षित है। और उस का पालन किये बिना किसी का जीवन इस्लामी नहीं हो सकता। क्योंकि कुर्आन का आदेश है कि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हें जो दें उस को ले लो। और जिस से रोक दें उस से रुक जाओ। (देखिये: सूरह हश्र आयत नं०: 7)

कुर्आन कहता है कि हे नबी! अल्लाह ने आप पर कुर्आन इस लिये उतारा है कि आप लोगों के लिये उस की व्याख्या कर दें। (सूरह नहल, आयत नं०: 44) जिस व्याख्या से नमाज़, व्रत आदि इस्लामी अनिवार्य कर्तव्यों की विधि का ज्ञान होता है। इसी लिये उस को सुरक्षित किया गया है। और हम हदीस के एक-एक राबी के जन्म और मौत का समय और उस की पूरी दशा को जानते हैं। और यह भी जानते हैं कि वह विश्वासनीय है या नहीं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि इस संसार में इस्लाम के सिवा कोई धर्म ऐसा नहीं है जिस की मूल पुस्तकें तथा उस के नबी की सारी बातें सुरक्षित हों।

12. इसी प्रकार हम इसे^[1] अपराधियों के दिलों में पुरो देते हैं।
13. वे उस पर ईमान नहीं लाते, और प्रथम जातियों से यही रीति चली आ रही है।
14. और यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल देते, फिर वह उस में चढ़ने लगते।
15. तब भी वह यही कहते कि हमारी आँखें धोखा खा रही हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।
16. हम ने आकाश में राशि चक्र बनाये हैं, और उसे देखने वालों के लिये सुसिज्जत किया है।
17. और उसे प्रत्येक धिक्कारे हुये शैतान से सुरक्षित किया है।
18. परन्तु जो (शैतान) चोरी से सुनना चाहे, तो एक खुली ज्वाला उस का पीछा करती^[2] है।
19. और हम ने धरती को फैलाया, और उस में पर्वत बना दिये, और उस में हम ने प्रत्येक उचित चीज़ें उगायीं।
20. और हम ने उस में तुम्हारे लिये जीवन के संसाधन बना दिये, तथा उन के लिये जिन के जीविका दाता तुम नहीं हो।

كَذَلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۝

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝

لَقَالُوا إِنَّمَا سُكَّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ عَنْهُمْ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ۝

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ۝

وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيزٍ ۝

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ يَشَهِدُ قَوْمًا ۝

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ۝

وَجَعَلْنَا الْكُوفَ فِيهَا مَعَاشٍ وَمَنْ لَّسْتُ لَهُمْ بِرَزَقِينَ ۝

1 अर्थात् रसूलों के साथ परिहास को, अर्थात् उसे इस का दण्ड देंगे।

2 शैतान चोरी से फरिश्तों की बात सुनने का प्रयास करते हैं। तो ज्वलंत उल्का उन्हें मारता है। अधिक विवरण के लिये देखिये: (सूरह मुल्क, आयत नं०: 5)

21. और कोई चीज़ ऐसी नहीं है, जिस के कोष हमारे पास न हों, और हम उसे एक निश्चित मात्रा ही में उतारते हैं।
22. और हम ने जलभरी वायुओं को भेजा, फिर आकाश से जल बरसाया, और उसे तुम्हें पिलाया, तथा तुम उस के कोषाधिकारी नहीं हो।
23. तथा हम ही जीवन देते, तथा मारते हैं, और हम ही सब के उत्तराधिकारी हैं।
24. तथा तुम में से विगत लोगों को जानते हैं और भविष्य के लोगों को भी जानते हैं।
25. और वास्तव में आप का पालनहार ही उन्हें एकत्र करेगा^[1], निश्चय वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।
26. और हम ने मनुष्य को सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से बनाया।
27. और इस से पहले जिनों को हम ने अग्नि की ज्वाला से पैदा किया।
28. और (याद करो) जब आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा: मैं एक मनुष्य उत्पन्न करने वाला हूँ, सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से।
29. तो जब मैं उसे पूरा बना दूँ, और उस में अपनी आत्मा फूँक दूँ, तो उस के लिये सज्दे में गिर जाना।^[2]

وَأَنْ مِنْ شَيْءٍ أَلَعِنْدَنَا خِزْيَانَةٌ وَمَا نُزِّلَ إِلَّا بِقَدَرٍ مَعْلُومٍ ﴿٢١﴾

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ﴿٢٦﴾

وَالْجِبَانِ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السُّمُورِ ﴿٢٧﴾

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعْوَاهُ سَاجِدِينَ ﴿٢٩﴾

1 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब के लिये।

2 फरिश्तों के लिये आदम का सज्दा अल्लाह के आदेश से उन की परिक्षा के लिये था किन्तु इस्लाम में मनुष्य के लिये किसी मनुष्य या वस्तु को सज्दा करना

30. अतः उन सब फ़रिश्तों ने सज्दा किया।
31. इब्लीस के सिवा। उस ने सज्दा करने वालों का साथ देने से इन्कार कर दिया।
32. अल्लाह ने पूछा: हे इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों का साथ नहीं दिया?
33. उस ने कहा: मैं ऐसा नहीं हूँ कि एक मनुष्य को सज्दा करूँ, जिसे तू ने सड़ें हुये कीचड़ के सूखे गारे से पैदा किया है।
34. अल्लाह ने कहा: यहाँ से निकल जा, वास्तव में तू धिक्कारा हुआ है।
35. और तुझ पर धिक्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन तक।
36. (इब्लीस) ने कहा^[1]: मेरे पालनहार! तो फिर मुझे उस दिन तक अवसर दे, जब सभी पुनः जीवित किये जायेंगे।
37. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दे दिया गया है।
38. विद्वित समय के दिन तक के लिये।
39. वह बोला: मेरे पालनहार! तेरे मुझ को कुपथ कर देने के कारण, मैं अवश्य उन के लिये धरती में (तेरी अवज्ञा को) मनोरम बना दूँगा, और

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾

إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣١﴾

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَ لَمْ أَكُنْ لَأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمِئٍ مَسْنُونٍ ﴿٣٣﴾

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾

وَلَنْ عَلَيْكَ اللَّعْنَةُ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٣٧﴾

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾

قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾

शिरक और अक्षम्य पाप है। (सूरह, हा, मीम, सज्दा: आयत नं०: 37)

- 1 अर्थात् फ़रिश्ते परिक्षा में सफल हुये और इब्लीस असफल रहा। क्यों कि उस ने आदेश का पालन न कर के अपनी मनमानी की। इसी प्रकार वह भी है जो अल्लाह की बात न मान कर मनमानी करते हैं।

उन सभी को कुपथ कर दूँगा।

40. उन में से तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा।

41. अल्लाह ने कहा: यही मुझ तक
(पहुँचने की) सीधी राह है।

42. वस्तुतः मेरे भक्तों पर तेरा कोई
अधिकार नहीं^[1] चलेगा, सिवाये उस
के जो कुपथों में से तेरा अनुसरण करे।

43. और वास्तव में उन सब के लिये
नरक का वचन है।

44. उस (नरक) के सात द्वार हैं, और
उन में से प्रत्येक द्वार के लिये एक
विभाजित भाग^[2] है।

45. वास्तव में आज्ञाकारी लोग स्वर्गों
तथा स्रोतों में होंगे।

46. (उन से कहा जायेगा) इस में प्रवेश कर
जाओ, शान्ति के साथ निर्भय हो कर।

47. और हम निकाल देंगे उन के दिलों
में जो कुछ बैर होगा। वे भाई भाई
होकर एक दूसरे के सम्मुख तख्तों के
ऊपर रहेंगे।

48. न उस में उन्हें कोई थकान होगी
और न वहाँ से निकाले जायेंगे।

49. (हे नबी!) आप मेरे भक्तों को

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ ﴿٤٠﴾

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَنٌ
إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾

وَأَنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ
مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِينَ ﴿٤٦﴾

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَى
سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا
بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

نَبِيُّ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

1 अर्थात् जो बन्दे कुर्आन तथा हदीस (नबी का तरीका) का ज्ञान रखेंगे उन पर शैतान का प्रभाव नहीं होगा। और जो इन दोनों के ज्ञान से जाहिल होंगे वही उस के झाँसे में आयेंगे। किन्तु जो तौबा कर लें तो उन को क्षमा कर दिया जायेगा।

2 अर्थात् इबलीस के अनुयायी अपने कुकर्मों के अनुसार नरक के द्वार में प्रवेश करेंगे।

सूचित कर दें कि वास्तव में, मैं बड़ा क्षमाशील दयावान्^[1] हूँ।

50. और मेरी यातना ही दुखदायी यातना है।

51. और आप उन्हें इब्राहीम के अतिथियों के बारे में सूचित कर दें।

52. जब वह इब्राहीम के पास आये तो सलाम किया। उस ने कहा: वास्तव में हम तुम से डर रहे हैं।

53. उन्होंने ने कहा: डरो नहीं, हम तुम्हें एक ज्ञानी बालक की शुभसूचना दे रहे हैं।

54. उस ने कहा: क्या तुम ने मुझे इस बुढ़ापे में शुभ सूचना दी है, तुम मुझे यह शुभ सूचना कैसे दे रहे हो?

55. उन्होंने ने कहा: हम ने तुम्हें सत्य शुभ सूचना दी है, अतः तुम निराश न हो।

56. (इब्राहीम) ने कहा: अपने पालनहार की दया से निराश केवल कुपथ लोग ही हुआ करते हैं।

57. उस ने कहा: हे अल्लाह के भेजे हुये फरिश्तो! तुम्हारा अभियान क्या है?

58. उन्होंने ने उत्तर दिया कि हम एक अपराधी जाति के पास भेजे गये हैं।

59. लूट के घराने के सिवा, उन सभी को हम बचाने वाले हैं।

وَأَنَّ عَذَابِيْهُمُ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ۝

وَيَذَرُهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ۝

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ۝

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ۝

قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَى أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فِيمَا كُنْتُ بَشِيرُونَ ۝

قَالُوا بَشِّرْكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ الْفَظِطِينَ ۝

قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ۝

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ۝

إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمَنْجُوهُمْ أَجْعَلِينَ ۝

1 हदीस में है कि अल्लाह ने सौ दया पैदा की, निबनावे अपने पास रख ली। और एक को पूरे संसार के लिये भेज दिया। तो यदि काफिर उस की पूरी दया जान जाये तो स्वर्ग से निराश नहीं होगा। और ईमान वाला उस की पूरी यातना जान जाये तो नरक से निर्भय नहीं होगा। (सहीह बुखारी: 6469)

60. परन्तु लूत की पत्नी के लिये हम ने निर्णय किया है कि वह पीछे रह जाने वालों में होगी।
61. फिर जब लूत के घर भेजे हुये (फरिश्ते) आये।
62. तो लूत ने कहा: तुम (मेरे लिये) अपरिचित हो।
63. उन्होंने ने कहा: डरो नहीं, बल्कि हम तुम्हारे पास वह (यातना) लाये हैं, जिस के बारे में वह संदेह कर रहे थे।
64. हम तुम्हारे पास सत्य लाये हैं, और वास्तव में हम सत्यवादी हैं।
65. अतः कुछ रात रह जाये तो अपने घराने को लेकर निकल जाओ, और तुम उन के पीछे रहो, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। तथा चले जाओ, जहाँ आदेश दिया जा रहा है।
66. और हम ने लूत को निर्णय सुना दिया कि भोर होते ही इन का उन्मूलन कर दिया जायेगा।
67. और नगरवासी प्रसन्न हो कर आ गये।^[1]
68. लूत ने कहा: यह मेरे अतिथी हैं, अतः मेरा अपमान न करो।
69. तथा अब्ब्राह से डरो, और मेरा अनादर न करो।
70. उन्होंने ने कहा: क्या हम ने तुम्हें विश्व

إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَرْنَا لَهَا مِنَ الْغَيْرِ ۖ ۝

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ۝

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّتَكَبِّرُونَ ۝

قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِآكَافٍ وَإِنَّا نَسْتَأْذِنُ ۝

وَأَتَيْنَكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝

فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُ وَاحِدٌ ۝
تُؤْمَرُونَ ۝

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَهُمْ لَآءٌ مُّقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ۝

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ۝

قَالَ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ صِغَبِي فَلَا تَفْضَحُونِ ۝

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَغْرُبُوا ۝

قَالُوا أَوَلَمْ نُنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ۝

1 अर्थात् जब फरिश्तों को नवयुवकों के रूप में देखा तो लूत अलैहिस्सलाम के यहाँ आ गये ताकि उन के साथ अशलील कर्म करें।

वासियों से नहीं रोका^[1] था?

71. लूत ने कहा: यह मेरी पुत्रियाँ हैं यदि तुम कुछ करने वाले^[2] हो।

72. हे नबी! आप की आयु की शपथ!^[3] वास्तव में वे अपने उन्माद में बहक रहे थे।

73. अन्ततः सूर्योदय के समय उन्हें एक कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया।

74. फिर हम ने उस बस्ती के ऊपरी भाग को नीचे कर दिया, और उन पर कंकरीले पत्थर बरसा दिये।

75. वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं प्रतिभाशालियों^[4] के लिये।

76. और वह (बस्ती) साधारण^[5] मार्ग पर स्थित है।

77. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है, ईमान वालों के लिये।

78. और वास्तव में (ऐय्का) के^[6] वासी अत्याचारी थे।

قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ۝

لَعَبْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ۝

فَجَعَلْنَا عَلَيْهِمَا سَافِلًا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً
مِّن سِجِّيلٍ ۝

إِن فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّمُتَوَسِّعِينَ ۝

وَأَنَّهَا سَبِيلٌ مُّعِينٌ ۝

إِن فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

وَأَن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لظَّالِمِينَ ۝

1 सब के समर्थक न बनो।

2 अर्थात् इन से विवाह कर लो, और अपनी कामवासना पूरी करो, और कुकर्म न करो।

3 अल्लाह के सिवा किसी मनुष्य के लिये उचित नहीं है कि वह अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ की शपथ ले।

4 अर्थात् जो लक्षणों से तथ्य को समझ जाते हैं।

5 अर्थात् जो साधारण मार्ग हिज़ाज़ (मक्का) से शाम को जाता है। यह शिक्षाप्रद बस्ती उसी मार्ग में आती है, जिस से तुम गुज़रते हुये शाम जाते हो।

6 इस से अभिप्रेत शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति है, ऐय्का का अर्थ वन तथा झाड़ी है।

79. तो हम ने उन से बदला ले लिया, और वह दोनों^[1] ही साधारण मार्ग पर हैं।
80. और हिज्र के^[2] लोगों ने रसूलों को झुठलाया।
81. और उन्हें हम ने अपनी आयतें (निशानियाँ) दीं, तो वह उन से विमुख ही रहे।
82. वे शिलाकारी कर के पर्वतों से घर बनाते, और निर्भय होकर रहते थे।
83. अन्ततः उन्हें कड़ी ध्वनि ने भोर के समय पकड़ लिया।
84. और उन की कमाई उन के कुछ काम न आयी।
85. और हम ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है, सत्य के आधार पर ही उत्पन्न किया है, और निश्चय प्रलय आनी है। अतः (हे नबी!) आप (उन को) भली भाँति क्षमा कर दें।
86. वास्तव में आप का पालनहार ही सब का स्रष्टा सर्वज्ञ है।
87. तथा (हे नबी!) हम ने आप को सात ऐसी आयतें जो बार बार दुहराई जाती हैं, और महा कुर्आन^[3] प्रदान किया है।

فَأَتَقْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ۝

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسِلِينَ ۝

وَآتَيْنَهُمُ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝

وَكَانُوا يُنَادُونَ مِنَ الْجِبَالِ بِبُيُوتِهِمْ ۝

فَلَاخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ۝

فَمَا أَعْنَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ فَاصْفِرِ الصَّفْعَ الْعَظِيمَ ۝

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِ وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۝

1 अर्थात् मद्यन और ऐय्का का क्षेत्र भी हिजाज़ से फिलस्तीन और सीरिया जाते हुये, राह में पड़ता है।

2 हिज्र समुद्र जाति की बस्ती थी जो सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति थी, यह बस्ती मदीना और तबूक के बीच स्थित थी।

3 अबु हरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का

88. और आप उस की ओर न देखें, जो संसारिक लाभ का संसाधन हम ने उन में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा है, और न उन पर शोक करें, और ईमान वालों के लिये सुशील रहें।

لَا تُمَدَّنْ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَاهُ
أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَخَفِضْ
جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

89. और कह दें कि मैं प्रत्यक्ष (खुली) चेतावनी^[1] देने वाला हूँ।

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾

90. जैसे हम ने खण्डन कारियों^[2] पर (यातना) उतारी।

كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِبِينَ ﴿٩٠﴾

91. जिन्होंने ने कुर्आन को खण्ड खण्ड कर दिया^[3]।

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٩١﴾

92. तो शपथ है आप के पालनहार की। हम उन से अवश्य पूछेंगे।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾

93. तुम क्या करते रहे?

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

94. अतः आप को जो आदेश दिया जा

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾

कथन है कि उम्मुल कुर्आन (सूरह फातिहा) ही वह सात आयतें हैं जो दुहराई जाती हैं, तथा महा कुर्आन है। (सहीह बुखारी- 4704)

एक दूसरी हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “अल्हम्दु लिब्नाहि रब्बिल आलमीन्” ही वह सात आयतें हैं जो बार बार दुहराई जाती हैं, और महा कुर्आन है, जो मुझे प्रदान किया गया है। (संक्षिप्त अनुवाद, सहीह बुखारी- 4702)। यही कारण है कि इस के पढ़े बिना नमाज़ नहीं होती। (देखिये: सहीह बुखारी: 756, मुस्लिम: 394)

1 अर्थात् अवैज्ञा पर यातना की।

2 खण्डन कारियों से अभिप्राय: यहूद और ईसाई हैं। जिन्होंने ने अपनी पुस्तकों तौरात तथा इंजील को खण्ड खण्ड कर दिया। अर्थात् उन के कुछ भाग पर ईमान लाये और कुछ को नकार दिया। (सहीह बुखारी- 4705-4706)

3 इसी प्रकार इन्होंने ने भी कुर्आन के कुछ भाग को मान लिया और कुछ का अगलों की कहानियाँ बताकर इन्कार कर दिया। तो ऐसे सभी लोगों से प्रलय के दिन पूछ होगी कि मेरी पुस्तकों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया?

रहा है, उसे खोल कर सुना दें। और मुशरिकों (मिश्रणवादियों) की चिन्ता न करें।

95. हम आप के लिये परिहास करने वालों को काफी हैं।
96. जो अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य बना लेते हैं, तो उन्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा।
97. और हम जानते हैं कि उन की बातों से आप का दिल संकुचित हो रहा है।
98. अतः आप अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करें, तथा सज्दा करने वालों में रहें।
99. और अपने पालनहार की इबादत (बंदना) करते रहें, यहाँ तक कि आप के पास विश्वास आ जाये।^[1]

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ۝

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ۝

وَلَعِبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝

1 अर्थात् मरण का समय जिस का विश्वास सभी को है। (कुर्तुबी)